सूचना ।

१. पुस्तक में जहां कहीं सन् लिखा है उसे सम्वत् समझें ।

२. पृष्ठ ४० की अंतिम लाइन के अंत में मंगमल के बजाय मंगलम् समझें ।

३. पृष्ठ ६० पर चन्द्रनाथजी के बजाय चन्द्रप्रभु समझें ।

श्री महावीर स्वामी नमोनमः
चौधरी जीवनलाल
J P WORKS JAIPUR.

॥ श्री महावीर स्वामी नमो नमः ॥

॥ श्रीगणपतये नमः ॥

श्री जैन धर्म

॥ प्रतिष्ठा पाठ का कथन ॥

कृपा दृष्ट्या यस्य त्रिभुवन मिदं विन्दति सुखम् ।
तथा कर्माण्यष्टौ विलयमुपयान्ति त्रिजगताम् ॥
भजन्ते यं नित्यं विमल मतयः प्राज्ञमुनियो ।
महावीरः स्वामी सकल जन वन्द्यो विजयते ॥

श्रीगणाधिपतये नमः ॥ ओंनमः सिद्धेभ्यः॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीवर्द्धमान जिनराज गौतमायनमोनमः ॥ अब अपने इष्ट देवकूं भले प्रकार नमस्कार कर प्रतिष्ठा पाठ का कथन बड़े आचार्यनके व्याख्यान के अनुसार लिखे हैं ।

श्रीवर्द्धमान जिनराजकूं मुक्ति पीछे तीन केवली भये ता पीछे छः सौ तियांसी वर्ष तांईं तो अङ्ग पूर्व रहे। पीछे अङ्ग के धारक श्रीजिन सेनाचार्य्य भये। सन् एक के साल तिनका किया महापुराण आदि अनेक सिद्धान्त हैं उन में अपने इष्ट के साधन से सर्व वस्तु का यथावत स्वरूप जानकर जिनशासन का यथावत किया आदि नग्र खंडेला में मरीका प्रसम कर श्रावक लोक की थापना कर क्षत्रियों कूं मद्य मांसादिक का त्याग कराया और न्यारी न्यारी कुल देवी स्थापित करीं और प्रतिष्ठा कराई और राजाकूं साह पद दीना और प्रतिष्ठा में अगणित ही द्रव्य लाग्या यहां की विशेष वार्ता अनेक स्थान से जान लेनी ता पीछे कई प्रतिष्ठा रणतगढ के ऊपर हुई साह जिनदास

कराई अगणित द्रव्य लगाया सन् ११९ के साल भट्टारक भावचन्द्रजी के नगर वारे खंडेला में कल्याणमल कासलीवाल कराई तीमें रुपया क्रोड़ चोवीस लाग्या मुनि ७०० आर्थ्यिका १२०० श्रावक तीन लाख श्राविका पांच लाख समग्र संघ भेला हुआ १ हाथी कूं संन्यास दीनूं सो वो हाथी मरकर देवलोक गयो सन् १३५ सके साल नग्र खंडेला में रेवड़मल दोसी प्रतिष्ठा कराई आचार्य्य देवनन्द स्वामी के वारे रुपया पच्चीस क्रोड़ लाग्या सन् १७४ की साल भट्टारक जस कीर्ति जी के वारे नगर खंडेला में टोडरमल टोंग्या प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस क्रोड़ लाग्या मुनिराज ५०० हाजिर छा सन् १८२ के साल भट्टारक जगत् कीर्ति के वारे नगर खंडेला में पोहकरमल

पहाड़य प्रतिष्ठा कराई रुपया चोबीस क्रोड़ लाग्या मुनिराज २०० हाजिर छा सन् २०३ की साल भट्टारक महासेन जी के बारे नगर खंडेला साह धर्मसेन प्रतिष्ठा कराई रुपया सताईस क्रोड़ लाग्या सन् २०६ के साल भट्टारक जगत् गुरुजी के बारे नगर खंडेला में प्रतिष्ठा कराई रुपया छत्तीस क्रोड़ लाग्या सन् २६६ के साल भट्टारक देवचन्द्र जी के बारे नगर खंडेला में साह धर्मचन्द्र प्रतिष्ठा कराई रुपया उनतीस क्रोड लाग्या सन् ३३० के साल भट्टारक मही चंद्रजी के बारे नगर खंडेला में देवनसेन गोधा प्रतिष्ठा कराई रुपया चोदह क्रोड लाग्या सन् ३८५ के साल भट्टारक देवचन्द्रजी के बारे साह गौतम प्रतिष्ठा कराई रुपया बारह क्रोड लाग्या सन् ४०३ के साल भट्टारक जिन

चंद्र जी के वारे नगर खंडेला में प्रतिष्ठा कराई रुपया छब्बीस क्रोड लाग्या सन् ४६० के साल नगर खंडेला में भट्टारक धर्मचन्द्रजी के वारे साह वल्लभ प्रतिष्ठा कराई रुपया पच्चीस क्रोड लाग्या सन ४६६ के साल भट्टारक यशोधरजी के वारे नगर खंडेला में साल साह मयाचन्द प्रतिष्ठा कराई रुपया चोबीस क्रोड लाग्या सन् ५०१ के साल नगर रेवाड़ी में भट्टारक जयसेन स्वामी के वारे साह देवसी प्रतिष्ठा कराई रुपया पन्द्रह क्रोड लाग्या सन् ३८४ के साल भट्टारक जयदेव स्वामी के वारे नगर खंडेला में साह जिनदास प्रतिष्ठा कराई रुपया बीस क्रोड लाग्या सन ५६६ के साल भट्टारक प्रभाकर स्वामी के वारे नगर जावद में साह प्रेमसी प्रतिष्ठा कराई रु० तेईस क्रोड लाग्या सन् ६०० के साल

भट्टारक भानुनन्दजी के वारे नगर लाडगा में साह लाडणासी प्रतिष्ठा कराई रु० चोवीस क्रोड लाग्या मुनिराज ३०० संघाष्ट सहित आया सन् ६०२ के साल नगर भंवरकोल में भट्टारक चारित्रभूषणजी के वारे नानूंसाह प्रतिष्ठा कराई रुपया पच्चीस क्रोड लाग्या सन् ६०६ के साल भट्टारक महाचन्द्रजी के वारे नगर खँडेला में वीरमभौंसा प्रतिष्ठा कराई रु० सात क्रोड लाग्या आर्यिका ५०० मुनि २०० संघ भेला हुआ सन् ६६२ के साल भट्टारक महीचन्द्रजी के वारे नगर सांवत खेडा में सांह धनपाल प्रतिष्ठा कराई रु० चौदाह क्रोड लाग्या सन् ६७१ के साल भट्टारक देवचन्द्रजी के वारे साह गोकलसी श्रीगिरनार जी को संघ चलायो और सबकूं आप सवारी दीनी और खरची दीनी आप पैदल चाल्यो

मुनिराज १०० आर्यिका ३०० श्रावक १००००० छा और श्री गिरनारजी की प्रतिष्ठा कराई और सुवर्ण की ऊपर सूं लेकर नीचा ताई धजा बांधी माला मोहर पच्चीस हजार में लीनी इत्यादिक सर्व काम में पेंतीस कोटि रुपया लाग्या सन् ६६६ के साल भट्टारक देवसेन जी के बारे नगर लाडण में प्रतिष्ठा कराई साह जयकुमार तीमें रु० चोदह क्रोड लाग्या मुनिराज ५१ संघ सहित आया उस समय में श्वेताम्बर रथ बन्ध कर्‌यो तदि देवसेन स्वामी विना हाथ्या जत्या की चाद्‌र्या ऊपर रथ चलायो जती भाज गया धर्म की प्रभावना विशेष हुई उस समय में कैई श्वेताम्बारी दि-गम्बरी श्रावक का भेष धारते भये सन् ७७० के साल बारा नगर में श्री कुंद कुंदाचार्य मुनिराज

भये तिन का व्याख्यान करजेछ कुंद सेठकुं दलता सेठाणीके पांचवां स्वर्ग का देव भयकरि गर्भ में आये ती दिन सूं सेठ का नाम प्राप्ति हुवा का हे ते पुष्पादिक की वर्षा का कारण से नवमहिना पीछे पुत्र का जन्म भया ता समयमें स्वेताम्बरन की आम्नाय विशेष होय रही दिगम्बर सम्प्रदाय उठ गई एक जिन चंद्रमुनि रामनगरी पर्वत में रह तां का दर्शन सेठजी करबोकरे सो यां का पुत्र आठ वर्ष का हुवा अर ऊठी श्री आचार्य का आयु कर्म नजदीक आया वे कुमार नित्य आवछा सो पूर्वला कारण ते कुंद कुंद कुमार दीक्षा लेता भया आचार्य तो देव लोक पधारे अर कुंद २ मुनिराज का मार्ग विशेष जान्या नहीं सो अपने गुरुस्थापन के निकट ही ध्यान करते

भये सो इन का ध्यान के प्रभाव से सिंह व्या-
घ्रादिक सातभाव कूं प्राप्त भया श्री स्वामी के
ऐसा ध्यान प्रगट भया तीन ज्ञान अगोचर
श्री समन्दर स्वामी पूर्वले विदेह क्षेत्र का राजा
तीन ध्यान स्वामीन सरु कन्या आदि समव
सरण की रचना विधि पूर्वक चित्त रूपी महल
में बनाय त्यां की बीच गंध कूटी रच दीनी
और वारा सभा सहित रचना बनाय सिंहासन
ऊपर चार अंगुली अंतरीक श्री महाराज श्री
सीमन्धर स्वामी कूं विराजमान देखकर तत्काल
श्री कुन्द पर्वतराज नमस्कार करता भया उसी
हीं समय में श्री भगवान मुनिराज कुं धर्म
बृद्धिदीनी तदि चक्रवत्यादिक महन्त पुरुषा के बड़ो
बिस्मय उत्पन्न हुवों अवार कोई इन्द्रदेव
मनुष्यन में कोउ भी आया नाहीं और स्वामी

धर्म बृद्धि दीनी त्यां कारण कहा तद् महा पद्म चक्रधर आदि सब ही राजा उठकर स्वामी २ कूं नमस्कार कर पूछते भये भो सर्वज्ञ देव या धर्मबृद्धि आप कुणकूं दिनी ये वचन सुनकर स्वामी दिव्य ध्वनि से व्याख्यान किया हे महा पद्म भरत क्षेत्र का आर्य खंड में रामगिरि पर्वत के ऊपर कुंदकुंद मुनिराज तिष्टे हैं उनने अवार मन वचन काय की शुद्धता करिर नमस्कार किया तद धर्म बृद्धि दिनी है असा स्वामी का वचन सुनकर सबही सभालोकन के वस आश्चर्य उपज्या भो भगवान् आप दिव्य ध्वनि पहली भले प्रकार हम सुनी हूती ज्यो भरत क्षेत्रादिक इस क्षेत्र में धर्म का मार्ग नाहीं और पाखंडी बहुत हैं जिन धर्म का नाम मात्र जानेगा नाहीं अर्थविपरीत मार्ग में चालेगा पाखंडी

लोक की मान्य बहुत होयगी गुरु के द्रोही
लोग हो जायगा स्वस्वकल्पित ग्रंथ बांचेंगे
अनेक पाखंड रचेंगे जिनराज का धर्म आ गया
समान कर कूं आया सो आपका दर्शन करिर
व देव भगवन्त की सभा में ही में गये ये
समाचार सुनकर श्री कुंद मुनिराज विशेष
आनन्द कुँ प्राप्त भया और चोडे असा शब्द कारी
प्रकाश करते भये अत्र श्री सीमन्धरस्वामी के
दर्शन करेंगे तद आहारादिक लेंगे या कहकर
स्वामी फिर मोन धारकर ध्यान में मगन भये
असा ध्यान आवतवद वैसा कारण होय अब दो
चार दिन में चित्त की थिरता तें वैसा ही ध्यान
प्रगट भया और समव सरण वणाय और साक्षात
श्री समंधरस्वामी कूं नमस्कार करता भया वैसा
ही समय धर्मबृद्धि फेर भगवन्त की हुई और

असा शब्द भया और भगवान कई जो देव गये छे सो पाछे आये अब उसके ऐसा नेम हुआ के ज्यो दर्शन बिन सर्व त्याग है तद देवां कहीं भो स्वामिन् वे आये नहीं तद भगवन्त आज्ञा-करी तुम वा समय गये तब देव पूछते भये समय कौनसा तद भगवन्त कही यहां रात्रि होती है वहां दिन है वहां दिनहै यहां रात्रि है सूर्य का गमन असा है सो तुम दिन में जावो तो उनका आगमन हो जायेंगे असा वचन सुनकर वे दोनों देव मध्यान समय में आये मुनिराज का दर्शन हुआ और परस्पर वचना-लाप हुवा देव हाथ जोड़ नमस्कार कर कर विनती करी आप विमान में बिराजो और श्री सीमन्दर स्वामी का दर्शन करो या वात सुनकर प्रसन्न होय आप हूं दीसेगा पाखंडी का मत जग

जग पावेंगे व्यंतरादिक कुँदेवन का चमत्कार प्रति भासेगा स्वस्वधर्म कूं छोड़ कर सब ही लोक उनमत्त मार्ग में धसेंगे अब आप असा ऋद्धि धारके मुनिराज का नाम सो हमरो बड़ा आश्चर्य है तद कवेली वर्णन करते भये-ऐसे मुनिराज विरले होते हैं आज्ञा का चमत्कार कर समान आर्य खंड में चमत्कार होय होय वो करेंगे वे स्वर्ग वासी देव के जीव हैं यहां सभा में रवि प्रभु सूर्य प्रभु देव हैं तिनका वे आगले भव के भाई हैं ऐसा शब्द होते दोये देव श्री भगवन्त के निकट आये नमस्कार कर सकल व्याख्यान पूछा और मुनिराज का दर्शन करणे वास्ते रामगिरि ऊपर आवते भये जिस वक्त देव आये ता समय में रात्रि थी तद मुनिराज कुं नमस्कार

करिरवे मुनिराज बोल्या नहीं अब उन का शिष्य त्रिनाध्या तिष्टे छे तिनका दर्शन भया उन से ही बतलावन भई और देवन कहीं श्री सीमंदर स्वामी कूं धर्म वृद्धि दीनी तद्दले अठे आया अब स्वामी बोलते नहीं सो हम भगवान के समव सरण में ही पाछा जावां छा यो कह कर देव भगवान के समुह शरण में गये अब प्रभात का समय हुवा तद प्रभात का नमस्कार सब ही शिष्य करते भये अर रात्रि का समचार श्री सीमन्दर स्वामी संबंधी सर्व विधि पूर्व मालूम करया और फेर कहीं दोय देव आप के दर्शन करने विमान में विराजे और विमान आकाश मार्ग चाल्यो सो अनुक्रम से क्षेत्र भोग भूमिका देश के ऊपर विमान चल्या जाय छा सो स्वामी के सामायिक का समय आ

गया सो सामायिक करती वक्त पींछी हाथ से गिर पड़ी और पवन का वेग अत्यंत ल्याग्यां ही तद स्वामी कही अब हमारा गमन अगारी नहीं काहे तें मुनिराज का वाना बिना मुनिराज की पहिचान नांही तद देव पींछी हेरणे कूं बडा यत्न किया तद पींछी पाई नहीं और गृद्ध पक्षी जाति के जानवरन की पांखा पड़ी हुई सो वह अति कोमल तिन कूं भेली कर उनकी पींछी का आकार बनाय श्री मुनिराज कूं सोंपी तद आप कोमल जान अर धर्म कारन के निमित्त अङ्गीकार कर अगाडी गमन करता भया इस कारण से दूसरा नाम गृद्ध पिच्छाचार्य प्रकट भया अब विदेह क्षेत्र में जाय पहुंचे श्री सीमन्दर स्वामी का संमे सरणमान रक्ष आदि विभूती युक्त देखकर प्रसन्नभये. आप

अन्तरंग का शुद्धती धार विमान से उतरे भगवान का समवसरण में प्रवेश किया और श्री सीमन्दर स्वामी के तीन प्रदक्षिणा देकर नमस्कार किया और अस्तुति करी अहो सर्वज्ञ तुम्हारी महिमा अगम्य है अगोचर है आप सकल वस्तु को सदैव ही देखो हो आप जगत्के गुरू हो आप परमेश्वर हो आप के नाम से अनेक जन्म पाप प्रलय होय हैं आपका केवल ज्ञान सर्व प्रति भासी है आप पुण्याधिक हो आप ब्रह्म रूप हो महेश हो विष्णुरूप हो चतुर्भुज हो गणधरादिक देव भी तुम्हारे गुणगाण कथन करते थक गये हमारी कहां तागित आज हमारा शरीर सफल भया आज हमारी मोक्षमयी मानों आसा में आनन्द मानूं हूं या कह कर भगवान की गंध

कुटी की कटनी ऊपर देव बैठावते भये काहे
ते वांह का शरीर पांच से धनुष का और वह
६ हाथ का इस कारण से वेसाही समय में चक्र
धर आया। गंधकुटी के ऊपर नजर गई तद्
हाथ में लेकर विचार करता भया यह कुणसा
आकार है ६ खंड में यह आकार कहूं नहीं
देखा ऐसा आकार कुनका है तद् चक्रधर
भगवान कूं पूछता भया हे जिनेंद्र ये मनुष्य
के आकार कौनसा जीव है तद् भगवान की
दिव्य ध्वनी हुई यह भरते मुनिराज है तुम
पहली धर्मबृद्धि का कारण पूछा था सो अब
ये दर्शन करने निमित्त आये हैं ऐसा शब्द
सुनकर प्रसन्न होय चक्रधर मुनिराज कूं
कटनी ऊपर विराजमान कर नमस्कार
करता भया तद् मुनिराज का नाम एलाचार्य

प्रगट होता भया भगवान की आज्ञा हुई इन कूं सकल संदेह का निवारण करावणा वाला सिद्धांत सिखावो और ग्रंथ लिखाय सोंपा धर्म का उद्योग होगा अब आपके जैसो संदेह छा सो सब भगवान सूं पूछकरि निसंदेह भया एक दिन चक्रधर विनती करी आपआहार कूं उतरो तद आप कही योग्यता नाहीं काहे ते यहां दिन हमारे क्षेत्र में रात्री हम वहां के उपजे यहां आहार कैसे अंगीकार करें सो स्वामी दिन ७ सात ताई निराहार ही रहे भगवान की दिव्य ध्वनि रूपी अमृत के पीवते क्षुधा बाधा न देती भयी चार शास्त्र लिखाय मतांन निर्णय चोरासी हजार सर्व सिद्धांत मथन चौंयासी हजार कर्म प्रकाश बहत्तर हजार प्रकाश न्याय वीस हजार ऐसे चार ग्रंथ लेकर भगवान सूं

आज्ञा मांगी देव विमान में बैठाकर रामगिरी ऊपर आय बिराजे देव अपने स्थान कूं गये। अब सबही स्वामी की आज्ञा में चालते भये श्वेताम्बर धर्म छुडाय दिगम्बर का मार्ग बताया और धनवाले को धन बताया और पुत्रवान कूं पुत्र दीना राजवाला कूं राज दीना केवल धर्म का मार्ग वंधाया के निमित्त हजारों श्रावक भरती होय गये कुंद सेठ सबन का मालिक भया ५६४ मुनिराज हुआ ४०० आर्यिक हुई अब आप सकल संघ सहित श्री गिरिनारजी की यात्रा वास्ते चालता भयाऔर श्वेताम्बरीन का संघ भी यात्रा चाल्या तिन की संख्या श्री पूज्य तो ८४ गछ के और यती १२००० और और उन के श्रावक श्रावकणी दोय लाख बावन हजार और चाकर पयादे वहुत से सो

ये दोनों संघ श्री गिरनार जी के नीचे अपनी अपनी हद्द में मुकाम करते भये तद श्री कुद कुन्दाचार्य जी का संघ ऊपर चढनेलगा तद स्वेताम्बरीन का हलकारा अगाडी गमन नहीं करने दीना और कही पहली यात्रा हमारी होगी पीछे यात्रा तुम करोगे यह समाचार सुनकर सबही पाछा आ गया आचार्य सूं विनती करी हे नाथ यह श्वेताम्बरी बहुत अपने संघ थोडा सो यात्रा कैसे होयगी तद आचार्य आज्ञा करी तुम उन सूं कहो तुम्हारे हमारे कुछ वैर तो है नहीं और जो तुम अपने मत का आडम्बर राख्या चावो छो तो अरू वरु आवो जो जीतेंगे सो ही पहली यात्रा करेंगे अब यात्रा तुम भी नहीं करोगे ऐसा वचन होना थका दोनों संघ का ही वाद ठहरा

जो जीतेगा सो यात्रा पहली करेगा दिगम्बर के स्वामी श्री कुंद कुंदाचार्य और श्वेताम्बर के मालिक शुक्लाचार्य जिस के चोवीस महा काल यक्ष का साधन सो इनके कितने ही दिन तक बाद भया तद एक दिन शुक्लाचार्य कुंद कुंद स्वामी का कमंडल में मछ्या कर दीनीं और समस्या से कोई कूं कही ये काहे के मुनि हैं इन का आचरण धीवर का है एसी वात सुनकर कोई श्रावक कही स्वामी के कमंडल में कांई छ स्वामी कही कमंडल के जल में फूल हैं स्वामी दिखावो तद कमंडल ऊंदो कर्यो सो कमलन का ढेर हो गया और स्वामी का नाम चोथा पद्म नंदी स्वामी प्रगट भया शुक्लाचार्य पींछी कमंडल दोनों उड़ाय दीना तद स्वामी सब यतीन की चादर बैठ

ना उड़ाय दीना शुक्लाचार्य कूं नग्न कर दीना पींछी तो ऊपर चादऱ्या नीचे इस तरह से चादर ऊपर पींछी होय गई कूटने लगी यती बाहर मेलने लगा ऐसा स्वामी चमत्कार बताया अब आप बोल्या एसी धूर्त विद्या से वाद नहीं होता है अब मैं कहता हूं या सरस्वती की प्रतिमा पाषाणमयी छ इनें बुलावो जो कह, वह ही पहली यात्रा करेगा तद शुक्लाचार्य अनेक पक्ष की स्थापना करी बुलाई नहीं बोली तद स्वामी कमंडल पींछी हाथ में लेकर श्री सीमन्द्र स्वामी कूं नमस्कार करी पींछी सरस्वती का शिर ऊपर धर कर आप प्रगट बोलते भये हे देव अब तू सत्य बचन का प्रकाश कर हूं तद देवी गर्जना रूप तीन बोल प्रगट बोल्या आदि दिगम्बर २ तीन गर्भ का

बालक की है चिन्ह जामें तद दिगम्बर सम्प्रदाय सत्य रूपा होगई श्वेताबरी भी देवी कूं बुलावन शुरू कन्या तद देवी कही तुम बारह वर्ष तक झगड़ा करो हमने एक सत्य था सो ही कहा तद श्वेताम्बरन के सैकडों शिष्य श्री कुंद कुंदचार्य के शिष्य भये प्रथम यात्रा श्री कुंद कुंदाचार्य जी का संघ लोक करता भया और श्री नेमिनाथ जी भगवान की प्रतिष्ठा करी और सकल गिर प्रतिष्ठा भया तादि मूलसंघ सरस्वती गच्छ बलात्कार गण श्री कुंद कुंदाचार्य का वंश बड़े नंदी मुनिराज कूं आचार्य पद दीना सो उनकी आम्नाय सकल संध्या गायत्री कर्म अंग न्यासादिक कर्म प्रतिष्ठा कलसाभिषेक पूजा दान यात्रा इत्यादि छ ऊं कर्मन की स्थापना

करी सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र रूप तीन वलयका सूत्र की यज्ञोपवीत श्रावक लोक कूं दीनी अन जन मार्ग का प्रकाश कर आप वारह नाम नग्र के वन में आप ये सव श्रावक कूं लोक दीनी और जैन मार्ग का प्रकाश कर आप वारह नाम नग्र के वन में आय ये सव श्रावक कूं शिक्षा देकर आप सन्यास धार कर पांचवे स्वर्ग में गये विशेष अधिकार वडे ग्रंथ से जान लेना यहां अधिकार मात्र वर्णन किया है सन् ७८४ के साल भटारक विष्णु नंद जी के वारह नगर अजमेर में वीर मकाने मंदिर करायो सिंहमरमर का पाषाण को और प्रतिष्टा कराई रुपया १६ लाख एक क्रोड लाग्या सन् ७८५ के साल भटारक विष्णु नंदजी के वोर गांव लाडण में साह सेठमल प्रतिष्टा

कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या सं० ७८०
की साल भटारक माघचन्द्रजी के बारे गंगवाडा
में यशोधर गंगवाल प्रतिष्ठा कराई रुपया चोबीस
लाख लाग्या सं० ७९६ के साल भटारक धर्म
नंदजी के वारे खंडेला में खडगमल साह प्रतिष्ठा
कराई रुपया बारह क्रोड लाग्या। सं० ७९७
के साल भटारक धर्मचन्द्रजी के बारे नगर
लाडरा में साह लाडरामल प्रतिष्ठा कराई
रुपया चोवीस लाख लाग्या सं० ८८० के साल
भटारक अभयनन्दनजी के बारे गांव धारपुर
में प्रतिष्ठा कराई रुपया चोबीस लाख लाग्या
सं० ८८५ गांव लाडरा में भटारक नरचन्द्रजी
के बारे बीरचंद फहाड्या प्रतिष्ठा कराई रुपया
चोबीस लाख लाग्या। सं० ९१० के साल
भटारक जगत्कीरतजी के बारे गांव गांवडी में

देवदास सेठी प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या ६६५ के साल भटारक माघचन्द्रजी के वारेगांव तोरा की पाटण में सेडू पाटणी प्रतिष्ठा कराई मुन सुव्रत स्वामी को रुपया चोवीस लाख लाग्या सं० ६६५ के साल भटारक माघचन्द्र जी के वारे गांव दोसा में वीरमदास वैद्य प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या। सं० १०५२ के साल भटारक गंणचन्द्रजी के वारे गांव लाडण में साह तुलसी प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या सं० ११०३ के साल भवदेवजी वारे झालरा पाटण में श्री शान्तनाथ जी की प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या सं० १११० साल भटारक भाव चन्द्रजी के वारे गांव लाडण में कोलसी वनाडा प्रनिष्ठा कराई रुपया चोविस लाख

लाग्या सन १११२ की साल भटारक भ।वसेन जी के वारे वीरम भैंसो ओसवाल दिगम्बरी हुवो आदि दिगम्बारी छो वासी राजोर को हाडोति का महाजनान व गुजरात का सेठान टांगां नीचे काड्या वोलकि ऊपर और तालव लीनी एक सिक्का का रुपया देणा और जिनस लेणी सो या वात बनी नहीं तद भैंसे माफ करी आबूजी में श्री शान्तनाथ जी का मंदिर बनाया एक क्रोड पांच लाख रुपया लाग्या प्रतिष्ठा में। १११४ के साल में तेजपाल बसन्त पाल खाती के पग का हुवा कुभाव का फल निष्फल नहीं जाय सो आबू शिखर के ऊपर बडा हजार शिखर का मंदिर विलोरी पाषाण का बनाया चौदा सौ चौवालीस मण का बम्ब श्री शांतनाथ स्वामी का बनाया और प्रतिष्ठा

कराई तीमें आस पास के दोनों आला में श्री कुंथनाथ अरहनाथजी विराजमान कन्या इन सब काम में बहत्तर से क्रोड रुपया लाग्या ज्योणार सुद्दां ६२ मंदिर जुदे गुमास्ता का हैं सं० ११२१ के साल महाचन्द्रजी स्वामी के वारे धन पोरवाल ने चित्रा वेली पायी तींके प्रताप से उदयपुर चित्तोर का राणा जी के सीर मंदिर वणावो शुरू कन्यो सो थंभन की लागत से ही डरप्यो तद सीर छोड दीनूं एक थंभ में दो २ लाख रुपया लगा दीना तींसूं समस्त काम का और प्रतिष्ठा कराई ती में रुपया वीस क्रोड लाग्या सं० ११२५ के साल भटारक महीचन्द्रजी के वारे टोडरमल भाई दोलजी गोत साह वासी लाडण का सों उठे आपका गुमास्तान कूं जिनस खरीदवा भेजा

छा सो वह ग्वालियर का डूंगर देखकर जिन बिंब आदि अनेक मकान वनाये पीछे साह आयो राजी हुवो उठे धनदत्त साह की बेटी ने आपकी बहिन थरप कर माहीरो दनूं रुपया पांच लाख और प्रतिष्ठा कराई रुपया तीन क्रोड़ लाग्या, सं० ११२६ के साल भटारक माघचन्द्रजी के बारे नगर खंडेला में सेडूमल सोगानी प्रतिष्ठा कराई रुपया चोवीस लाख लाग्या, सं० ११३५ के साल आचार्य सकल कीर्ति स्वामी के बारे गांव इन्द्रगढ में पद्मसी साह तारंगाजी की प्रतिष्ठा कराई और शिखर जी की प्रतिष्ठा यात्रा करी तीमें छियानवे क्रोड़ रुपया लाग्या, सं० ११४० के साल भटारक महीचन्द्रजी के बारे नगर चाडसूं में पोहपासिंह वाकली वाल प्रतिष्ठा कराई तीमें चोवीस

लाख रुपया लाग्या, सं० ११७५ के साल भटारक धर्मचन्द्रजी के वारे गढखंडारी में डूंगरही प्रतीष्ठाच्यो गयो वालू वासल साह गोत चांद-वांड प्रतिष्ठा कराई रुपया वीस लाख लाग्या सं० १३१० की साल भटारक अभयचन्द्र स्वामी के वारे गूजर मल भाई चांदा साह प्रतिष्ठा करानो विचाऱ्यो तद दोय घडी में गिरनारिजी से स्वामी आया पहली पिरोज साह मंदिर रोक दीना छा सो आप सकल महजीद उड़ाय दीनी मोलवीन कूं उंदा झुलाया वादशाह पगा पड्या छत्र चंवर मोरछल पाल-की नजर करी स्वामी नहीं राखी या वात हूरमा सुनी में भी खुदा का दर्शन करूंगी तद चांदा साह कूं वुलाय और सलाह करी हूरमा टेक करती है कि मैं भी खुदा का दर्शन

करूंगी सो अब तलक तो दिगम्बरही मुनिराज का मार्ग छा अब या बात निभैगी नहीं और तुम हम सता जो रहा हो जायगी उसकूं फेर कोई मेटने वाला नाहीं होयगा ताते खुदाकूं कहो कि तुम कपडा अंगीकार करो तद चांदा साह बिनती करी आप मानी नहीं तद सारा पंचराज लिखावट पढावट करी सो गांठ बांधकर महाराज का आसन ऊपर लाल कपड़ा पटक्या हूरमाकूं दर्शन हुआ छत्र पालकी चंवर मोरछल भेट हुई प्रतिष्ठा हुई सोना का पत्रा की ध्वजा बंधी प्रतिष्टा में रुपया बीस क्रोड लाग्या तां दिन की रीति अब बंधती चली जाय छे। सं० ३५२१ के साल भटारक प्रभाचन्दजी के बार गांव लाडणा में सूरजमल भौंसा प्रतिष्ठा कराई ती में तेइस लाख रुपया

लाग्या तीं समय एक कुलमी दक्षिणा को आयो माला ग्यारह हजार मोहर में लीनी दक्षिणा से १५०० मुनिराज ३०० आर्यिका ब्रह्मचारी १५००० छोटी आर्यिका ७१४ उपाध्याय पंडित १८०० जो कुलमी के जीम्या लोहोड सजन्या कुहाया। सं० १५५९ की साल भटारक जन चन्द्रजी के वारे नगर आमेर में कालू लुआड्यो डूंगर पर प्रतिष्ठा कराई मंदिर बणायो तीन अवार छोटी नसीयां कह छै तीमें दस लाख रुपया लाग्या। सं० १५६१ के साल भटारक जनचन्द्रजी के वारे चाडसू में सांगू साह प्रतिष्ठा कराई तीमें पांच लाख रुपया लाग्या १५६३ के साल गांव आंवा में भटारक प्रभाचन्द्र धर्मचद्रजी के वारे वेणीराम छावणो प्रतिष्ठा कराई राजा सूर्यसेण कूं जैनी कन्यो

श्री भटारक दो घडी में श्री गिरनार जी सूं आया बडी अजमत दिखाई देव माया से घृत खांड वा गुड का कुआ बावडी भर दीना जीमणार में ७५० मण मिरच मुसाला में लागी सबकूं जैनी कन्या। सं० १६५८ की साल भटारक चन्द्रकीर्त जी के बारे गांव दूधू में मालजी भोंसा प्रतिष्ठा कराई मंदिर ५ पांच बणाया दूधू में एक आरा में एक चोरु में १ एक काला डेरा में १ सीखोली में १ तीमें रुपया बीस लाख लाग्या ज्यां का बेटा मालावत कुहावछे। सं० १६६० की साल भटारक चन्द्रकीर्तिजी के बारे गांव सांखूण में मनीराम दोसी प्रतिष्ठा कराई मंदिर ४ वनाया साखूण में १ वानर सीदरी में १ हरसूली में १ लावा में १ चार जगह प्रतिष्ठा करी रुपया

चालीस लाख लाग्या । सं० १६६४ के साल भटारक देवचन्द्रजी के वारे गांव मोजावाद में नानूं गोदा प्रतिष्ठा कराई मोजाबाद में तीन शिखर को मंदिर वनायो और ऊंकेद्वार चोरासी हस्ती बंधा ।

गुमास्ता ८३ त्या पूर्व में झाकतो शिखरबंध मंदिर अकवर वादशाह का हुकम सूं वणाया सर्व तीर्थ कन्या प्रतिष्ठा कराई रुपया पच्चीस क्रोड लाग्या । सं० १७४६ के साल भटारक जगतकीर्तिजी के वारे चांद खेडी में किशनराम वघेरवाला भगवान को रथ हाथी को चलायो कोटा बूंदी का महाराज दोन्यू लेर चाल्या सभा सहित भटारक ११ जदि १ जती चालता रथ कूं बंद कर दिनूं और कही •म्हां की पूजा

कन्या रथ चालेलो तदि आचार्य या कही हाथ्याने खोलदो रथ बिना हाथ्या ही चालसी हाथी खोल्या पीछें रथ पाव कोस चाल्यो और जतीन कुहवाई अब थारी सामर्थ्य दिखा तद आचार्य के पगां पड्यो प्रतिष्ठा में रुपया पांच लाख लाग्या । सं० १७८३ के साल गांव बांस खोह में नंदराम लुहाड्या प्रतिष्ठा कराई भटारक चन्द्रकीर्तिजी के वारे तीमें रु० दस लाख लाग्या सं० १७६१ के साल भटारक जगत्कीर्तिजी के वारे गांव करवर हाडोती का मुलक में सोन-पाल छावडा टोडा रायसिंह का चोधरी प्रति-ष्ठा कराई चार संघ भेला हुआ जत्या माल उडायो तद चौधरी कही महाराज माल अटूट कन्यो पण जती लोग माल उडायो मंगावा छे तद आप कमंडल के छाटा दींना तद माल

चाल्यो नहीं आकाश में लटकवो करयो फेर जोर चाल्यो नहीं प्रतिष्ठा में रुपया दस लाख लाग्या। सं० १८२६ के साल भटारक सुरेन्द्र कीर्तिजी के वारे गांव सवाई माधोपुर में संघ ही नन्दलाल गोधा प्रतिष्ठा कराई रुपया पांच लाख लाग्या। सं० १८५२ के साल भटारक धर्म भूषणजी के वारे नगर अजमेर में धर्म दास गंगवाल प्रतिष्ठा कराई वासी किसनगढ का रुपया तीन लाख लाग्या। सं० १८६१ के साल भटारक सुरेन्द्रकीर्तजी के वारे रायचन्द छावडा सवाई जयपुर में प्रतिष्ठा कराई संघ चलायो रुपया आठ लाख लाग्या इस मरजाद बडी प्रतिष्ठा हुई सो आगम के अनुसार लिखे हैं और बडी प्रतिष्ठा के कराने हारे चोवीस राजा चोवीस मुनिराज भये त्याने प्रतिष्ठा कराई

संघ चलाया जिर्णोद्धार करया संघ पूजा करी धर्मका मार्ग राख्या तिनका नाम भी लिखे हैं आदिपुरुष का पुत्र भरतेश्वर चक्रधर नोनिधि चोदह रत्न का धारक त्याने एकलाख बाम्नहजार प्रतिष्ठा कराई और किला के ऊपर बहत्तर से मंदिर बनाये सुवर्णान की इंट्का रत्न के जडावट का जैन मंदिरों में यथा शरीर प्रमाण वर्ण प्रमाण जिनराज का प्रतिबिंब विराजमान करया और जुदी प्रतिष्ठा कराई सर्व डूंगर प्रतिष्ठा गया एसा चक्रधर नाम कीना सो अब तलक उस चेत्यालयन की पूजा देव विद्याधर करते हैं और श्रीगिरनार जी का पर्वत की प्रतिष्ठा करी अगारी सगर चक्रवर्ती हुआ त्यांके साठ हजार पुत्र पिता से हुकम मांग्या कैलास के चौगिर्दी गंगा फेर दीनी एसा भँवर पटक्या ज्यां के जोर ते नाव

आदि कुछ भी लाग नहीं एक भवन तो एसा है. सो जहाज़ पाताल माहीं चली जाय एक भवन एसा है जहाज जल के फटकार से आकास में चली जाय न जाण जे के जहाज कहां पडे और एसे मगरमच्छ हैं कि जहाज कूं निगल जायें और दूसरा मंदिरोंका उद्धार करया चौदह हजार मंदिरों की प्रतिष्ठा करी सैकडों मंदिर वनाये पूर्णका भंडार भरया सर्व मकानान में जिनराज का मंदिर वनाया और तीर्थों में प्रतिष्ठा करी यात्राकरी और अगारी मघवा चक्रवर्ती सनत्कुमार च० महापद्म च० हरिषेण इन्हों ने प्रतिष्ठा सैकडों कराई जिनदास अर्हदास सांतदास सुदर्शन धनपालादिक सेठों ने सैकडों प्रतिष्ठा कार्य कीना श्री जिनसेन गुणभद्र प्रभाकर देव यसोभद्र वीरभद्र जिन

चंद्र नीमचंद्र वीरचंद्र रामचंद्र अकलंकनंद्
मित्र प्रभाचंद्र वीरसेन, देवसेन, महासेन,
जयसेन, धीरसेन, भावचन्द्र कूंदकूंदाचार्य उमा-
स्वामी कमुद्चंद्र मानतूंग आचार्य सकल कीरत
आदि दिगम्वर सम्प्रदाय के धारक आचार्य भये
इन आचार्यन के उपदेश के कारण से सैकडों
प्रतिष्ठा भई इन्हों ने धर्मका बहुत उद्धार कीना
इन आचार्यन की कथा व्याख्यान बडे ग्रंथन
में हैं जिनसे जानलेनी यहां ग्रंथ बडे होनेके भय
से नहीं लिखे हैं इस ग्रथकी पूर्णता के अंत इष्टदेव
कूं भलेप्रकार हमारा नमस्कार होवे पंच परमेष्ठी
कूं नमस्कार होय और जैन शासन का प्रभाव बधो
और जिनसंघ की वधवारी होवे अबइन ग्रंथन कूं
जोवांचेंगे सुनेंगे तथा लिखेंगे लिखाय जैन मंदिर
में विराज मान करेंगे सो नर जिन शासन का उद्धा
रक जामना प्रतिष्ठा के नाम सुनवार के कारन ते

प्रतिष्ठा के भाव वधेंगे अहो या जगत में जीना अल्प है और धन नाहीं है ताते इसकी श्रद्धा शक्ति प्रमाण करना चाहिये शक्तिका लोप नहीं करणा जिनराज का यह उपदेश है जो सप्त क्षेत्र में धनरूपी नाजका बीज वाहूना जाते यह धन अगारी अटूट होगा जिनराज का कार्य में कृपणाता नहीं करणी कपटता छोडकर जिनराज का साधन करणा आचार्यन का उपदेश ग्रंथों की श्रद्धा राखणी अन्य ग्रंथन श्रवण ताते गगवधैं है जिनराज के ग्रथ सुना वते अत्यंत वैराग्य वधवारी होय है एसी अन्तरंग में शुद्धता धार कर नित्य याका पाठ करणा चाहिये यह ग्रंथ महा मंगलीक है वडोंके नाम के अधिकार हैं ।

इतिश्री प्रतिष्ठा पाठ समाप्तता मंगमल् सं०

सं०१९२३ का साल भाद्रपद शुक्ला ८ सोमवार लीपी कृतं।

चोधरी जीवनलाल वासींदगान सिकने टोडा रायसिंह हाल वासी सवाई जयपुर ठिकाणा जोंहरी बाजार घी वालों का रास्ता कलकत्ते वालों की हवेली में बीचला चोक में ठिकाना है।

श्री प्रतिष्ठा पाठ के कथन की पुस्तक मेरे वडों के हाथ की लिखी हुई है। सं० १८६१ के साल तक जिन भाईयों ने अपना अमूल्य धन लगा के प्रतिष्ठा कराई हैं जिन कों बार २ धन्यवाद देता हूं, प्रतिष्ठा ग्रंथ में ऐसा लिखाहै कि श्री सिकर जी महाराज की प्रतिष्ठा में छिनवे कोटि रुपया लाग्या और श्री गिरनारजी महाराज की प्रतिष्ठा में ३५

कोटि रुपया लाग्या और हजारों प्रतिष्ठा में भी लाखों वा क्रोडों रुपया लगाये हैं जिसका हाल प्रतिष्ठा पाठ में है ऐसे पुन्यवान् लोग पैदा हुए हैं जो भाई इन पाठ का नित्यप्रति पाठ करेंगे वा दूसरे कूं सुनावेंगे उन कूं बडा लाभ होगा इन प्रतिष्ठा पीछे सैंकडों गावों में प्रतिष्ठा कराई है जिनकी तादाद हजारों में है यह जमाना की खूबी है इन भाईयों कूं भी धन्यवाद देता हूं।

इन भाइयों में श्री मुनिराज महाराज वा भट्टारक जी महाराज जिन्होंने सैंकडों प्रतिष्ठा कराई हैं जिनको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

अथ श्री महाबीर जी की पूजा लिख्यते ।

॥ अडिल छन्द ॥

अच्युत स्वर्गत ज्यो कुंडलपुर जन्मे सद्धारथ घर आय । असलादे माता की सुरपति सेव करे अति हरष बढाय ॥ कनक वर्ण तन तुंग सात कर के हरि वर्ष बहत्तर आय । असे वीर नाथ बदन कूं स्थापत हो मैं सीस नवाय ॥ ओं ह्रीं श्री वीर नाथ जिनेन्द्राय । अत्रावत्राव तरसं सवौष्ट आकाननं ओं ह्रीं श्री महाबीर जिनेन्द्राय अत्रातिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । ओं ह्रीं श्री बीर नाथ जिनेन्द्राय अत्र मम संनिहि तो भवभव सान्निधापनं ॥ १ ॥

॥ अथ अष्टक राग ख्याल में ॥

षीरो दधिसुं जल भर ल्याय । पूजत हूं तुमरे पद पाय । हरो मेरी पीर ॥ श्री देवाधि देव महावीर । तुम पद तजे सुष काज । पूजत लहों सीव पुर राज हरो मेरी पीर ॥ श्री देवाधि देव महावीर ॥ हरो० ॥ ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जनम जरामृत बिनासनाय जलं द्रव्यायं मीति स्वाहा । जलं व केसर चंदन मलय घिसाय पूजत लहे शिवपुरराज हरो मेरी पीर । श्री देवाधि देव महावीर चंदनं २ तंदुल धरो थाल गिच धोय । पूजो देव अख पद मोय । हरो० ॥ श्री देवा० ॥ अक्षतं ३ सुरतरु केसव कुसम में गाय पूजत काम कलंक नसाय ॥ हरो० श्री देवा० ॥ पुष्पं ४ घेवर वावर सूं

थार पूजूं मेरी क्षुधा दुख टार ॥ हरो० ॥ श्री देवा० ॥ नैवेद्यं ५ दीपरतन मय धारत जोत मोहन से होय ज्ञान उद्योत ॥ हरो० ॥ श्री दे० ॥ दीपं ६ धूप दशाङ्ग हुतासन माहि खेवो अष्ट कर्म जर जात ॥ हरो० ॥ श्री देवा० धूपं ७ सब रितु के फल पक्व मंगाय पूज्यो धो सब फल सुख दाय ॥ हरो० ॥ श्री० दे० फलं ८ जल फल आठों द्रव्य मिलाय पूजो वीर नाथ जुग पाय ॥ हरो मेरी पीर श्री० ॥ तुम पद वंदत जे सुख काज पूजत लेही सिवपुर राज ॥ हरो० ॥ श्री देवा० ॥ अर्घं ९

अथ पंचकल्याणक छन्द दादरो ।

तेरी छबि मो मन बस गई रे । अजी प्रभु सन मत जी छबि मो मन० ॥ टेक ॥

॥ दोहा ॥

अच्युत स्वर्गस्थ कीचये सुदि अष्ठम आसाढ।
प्रिय कारन उर अवतरे सुर पूजन हम बाट ॥
तेरी० ॥ आजि छिब० ओं ह्रीं श्री बीर नाथ जिने
न्द्राय असाड सुदि छाटि गर्भ कल्यान अर्घं
१ चैत शुक्ल त्रयोदसी श्रवन सोभपुर
आय, जनमे हरि गिर मेर पै हम पूजे सुर
राय ॥ तेरी० ॥ आजि० छिव० ॥ ओं ह्रीं श्री
वर्द्धमान जिनेन्द्राय चेत शुक्ल तेरस जनम
मंगलाय अर्घ २ मंगसिर बदि दसमी तज्यो
अनवत राज महान नगन होय दिक्षा धरी
मन हर वन में ध्यान ॥ तेरी० ॥ आजि०
छवि० ॥ ओं ह्रीं श्री महावीर जिन मंगसिर
बुदि दशमी तप मंगलआये अर्घ ३ दसै शुक्ल
वैसाख ही हनेघाति चवकूर केवल लहिव

बोधिया करि मिथ्यातम दूर ॥ तेरी ॥ अजी छवि० ओं ह्रीं श्रीसनमति जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला दसमी ज्ञान कल्याण अर्घं ४ कातिक कृष्णा चतुर्दशी हनि अघाति शिवथान पांवा पुरत चलह्यो हम पूजें धर ध्यान । तेरी अजी छबि० । ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कातिक कृष्णा अमावस मोक्षमंगल आये अर्घं ५ जयमाल ।

॥ दोहा ॥

श्रीसनमत जिनराजजी जिनमत दीज्यो मोय,
यही अरज भवविषें जबलगि सबि नहीं होय ।

॥ पद्धडी छन्द ॥

जय जय जनवीर जिनन्द देव तुम चरन करों

दिन रैन सेव, जय मोक्ष मार्ग दातार धीर भवि जन त्यारन हरन पीर । १ । जय कुंडल पुर जनमा कल्याण त्रसलादे माता उदर आन तिथ षष्टि सुत आषाढ एव गर्भा कल्याण कीनों स्वमेव । २ । जन्मे सुद तेरस चेत मास सिद्धारथ राजा वासथान ता धाम देवपुर आये छांड आये उरधर आनन्द वाड । ३ । प्रभू कूं ले कर रमेर जाय पूर्व दिस सनमुख करत पाय । ४ । अविशेष कियो जल खीर लेय, सुरकरी भगत बहु गुन भनेय ५। जय महा वीर महाधीर वीर जयवर्धमान गुनगन गभीर जय सनमत पद सनमत दयाल महावीर महे नन महे सुभाल । ६ । सुरदेव सनग विकराल स्याम फुंकार कियो प्रभू सुषशान प्रभू धीर महा चित ना डगाय सुर अहिमद

को दिनों खिपाय ॥ ६ ॥ सुर नमो तब प्रभू देखि धीर जयकार शब्द कहे बार २ जय महादेव महानंद नंद मिथ्या तम नासय कर बसुचंद ॥ ७ ॥ जय कृपासिंधु त्रैलोक ईश जग जीवन में तुम कूं महेश जयदोष अठाराह रहत देव षटचाल गुन राज स्वमेव ॥ ८ ॥ बहु भान भक्त कर देवसार प्रभू को ले आय पुर मझार पितु मात देव धर बीर नाम सुर गये आप निज निज सुधाम ॥ ९ ॥ चित आतम चितवन कियो काज वैराग लियो तजि के सुराज बन जाय धन्यो चिद्रूप ध्यान कर सर्ग कर्म चवयात तहान ॥ १० ॥ केवल महिमा सुरदेवठान धुनवान खिरी प्रभु सुखमहान भव जीव बोध भव सिंधू तार हम हूं कूं जग जलते निकार ॥ ११ ॥ हे करुणा

सागर मैं अज्ञान जब लौंज धन्यो नहीं आप ध्यान तब लौंज धन्यो में भव में अनन्त तुम जानत हो भाषे अन्त ॥ १२ ॥ कहूं स्वर्ग गयो कहूं नर निगोद् तिरजंच भयो नर नाहिं बोध अब सरनागत आयो तुमार, निज जान हमें भव त्यार त्यार ॥ १३ ॥ कर जोरत चुन्नीलाल एव भव भव दिजे तुम चरन सेव घडि कातिक अमावस निस सुजान पांवा पुर वंन्दों मुक्त थांन ॥ १४ ॥ घत्ता जय वीर वीर अनेसुर नमत सुरेसुर सनमत शुभ मत दाताजी जय कुमति निवारन दुरगत टारन सब सुख कारन ताताजी ॥ १५ ॥

॥ अर्घं १५ दोहा ॥

श्री सनमत के चरन जुग वसु द्रव्यतैं त्रिकाल
चुंन्नी पूजे जो लहै सिवपुर परम रसाल ॥१६॥
इत्यासीर्वाद् इति श्री महावीर जी की पूजा

चुन्नीलाल कृत सम्पूर्णं ॥

मिती आसोज सु० ५ मंगलवार सं० १९४२
का वस्वा मध्ये लिखि श्री ॥

श्री वीतरागजी ॥ अथ श्री गिरनार
पूजा लीख्यते ॥ दोहा ॥ तपु कर वसु विधि कर्म
हाति वरी मुक्त वर नार सिद्धभए गिरनार ते
पूजूं नैमकुमार १ अरिल्ल अविराज मति
त्रिय छोड सती श्री गिरनार गये नेम प्रभू
धरि ध्यान वरी सिव नार पें सहस वहतर

छोड मुनिश्वर सिवन गये तिन सबकूं सिर नाऊं भव दुख हरण २ ओं ह्रीं श्री गिरिनार सिखर सिद्धि क्षेत्रे नेम प्रभू जिन अत्रा वत्रा तिष्ट तिष्ट स्थापनं अत्रा मम हेतो भव भव षट सन्नधापनं सन्नाधिकर नयरि पुष्पं जलं छिपेत अथाष्टकं छंद त्रभंगी । गंगा नवती को जीवन जीको अति सुख ही को मन भायो भरि कंचन झारी जनपद धारी तृषा निवारी सुख पायो अति राज मति त्रिय छोड सती श्री नैम जती गिरनार चढे धर ध्यान धरि सिवनार बरी बर धन्य धरी गुण आठजडे ओं ह्रीं श्री गिरनार सिखिर सिद्ध चेत्रे भ्यो नमः जलं १ मलिया गिर सियरो केसर पियरो जल कर हियरो घिस डारो पसी विध लाके हिय हरषाके जिन चरन चढाके सुख पावो अवि० चंदनं २ तंदुल गुण

भारी अमल उजारी शसि छवि धारी विमल करो बहुथाल भराये तुम ढिंग लाये सुख पाये आनन्द करो अविराज० अक्षतं ३ बहु फूल सुवासी बास हुलासी अलबिद रासी झूम रहे जे मंन मथ तूलं भव भय कूलं कर निर्मूलं सुख करे अवि० पुष्पं ४ घृत पक्क मिठाई सलिल पकाई नेवज लाई विध विधि कूं जिन चरन चढ़ाऊं हिय हर्षाऊं क्षुधानसाऊं भव भव कों अवि० नैवेद्य ॥ ५ ॥ दीपक उजियारी जगमग झारी घृत भर भारी ज्योत करो ये भव तम नासी ज्योत प्रकासी दीपक खासी आन धरो अविराज० दीपं ६ लेवर धूपं परमल रूपं अग्नि स्वरूपं में खेई वसु कर्म जरे सुख पूर्व सब सुख कर जिन लेई अविराज० धूपम् ७ बादाम सुपारी श्रीफल भारी मन हित-

कारी फल ल्याऊं अब चरन चढ़ाऊं प्रभुगुण गाऊं सीस नवाऊं सुखपाऊं अविराज० फलम् । ८ वसुद्रव्य मिलाके अर्घ बना के चरन चढ़ा के सुख पायो तुमपद शरनं सब सुख करनं भवदुख हरनं नमः जवाहर सिर नायो अवि राज मिति त्रिय छोड़ सती श्री नेम जती गिरनार चढ़ि धर ध्यान करि सिवनार वरी वर धंन धरी गुण आठ जड़े ओं ह्रीं अर्घ ६

॥ अथ जय माल दोहा ॥

श्री पर्वत गिरनार पे भोत जिनालय जान । तिन गुण की जय मालिका सुनों भव्य दे कान ॥ १ छंद मोति दाम वन्युं जूनागढ़ नग्र अनूप जयराजंन भावन सेना पति भूप बनी बस्ती जहां की गुलजार २ लगे जहं सुन्दर पठे गजार

चलि रस्ता गिर कूं सुविसाल बनी जहं बावरी ओर सुंताल लगे जहं आम बृक्ष प्रमान चली तह गैल सु भव्य सुजान ३ कडिसल्लता जुग पर्वत कीच वह जहां सुंदर अमृत नीर बध्यो पुल पूर्व अनूप सुजान लगो जहं लाखिन द्रव्य प्रमान ॥ ४ ॥ बने बीच बीच सोभा स्थान करें जहं आई सुजीव विश्राम कडि सल्लता पुन्य सुं बेरे सुंवेर भरे जहं जल पूर सुंठेर ॥ ५ ॥ कहो अब कोस सूं दोय प्रमान भरी जहं वावरी निर्मल पान । यह तो निस्तार सुं सुहद्द प्रमान । तहं ते चडि नो गिर सुजान ॥ ६ ॥ सब जन जय जय शब्द उचार । सडी चडत नहीं लागत वार । जबे नर ऊपर कोई मेहर । बने जन धाम गेर सुगेर । ७ । लखे गिरजाय जब असमान रहे

चक चौंद सूं जीव अजान बनैं बंगला बीच बीच सु धाम करे छिन एक सूं बैठ विश्राम । ८ । चढे फिर दोर सुं दोर करंत नहीं श्रम होय सूनेमसूं मरन्त । कोई चढते सुं करे उतरंत के भव पूछ कहा भगवन्त केई नर बोले धरो तुम धीर आये प्रभु नीर हरो तुम पीर । एसी कहते जय शब्द उचार चढे गिर जाई सुनत सव धार ॥ १० ॥ चढे सिढियां जवही सूं अशोक तब उत पहुंचत हत ही हत टेक बने जिन धाम सु अशोक विसाल कह महिमा जन की को लाल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

जव सोरठ के महल में पहुंचे सब नर नार ।
नीम प्रभु कूं बंद के पाप भये अघछार ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

निरमल जल के कुंड भरे अनूप सोहने ।
नर नारन के झुंड बिधि धोवे मन लायके ॥१३

॥ छन्द ॥

मोती दाम । चले बिधि धोय सब होय हुसियार
चढ़े गिर ऊपर जाय सिधार । नगीच सो
पावमकुं बहु भव्य करे जय बंदन कूं नर
हव्य ॥ १४ ॥ जुही मच कुंद चमेली अपार
जहां फुलवार अनेक प्रकार बड़ी खुसबु है
जहां बहु कुंद तहां सगरी गर कुंद सुकंद
॥ १५ ॥ जहां बहु आम अनार अशोक झुके
सीताफल बृक्ष विवेक करे जहं पिक बैठे सुँ
करेल रही झुक झूम अशोक सुं बेल ॥ १६ ॥
भये जहं प्रभु के दोय कल्याण वर तप के

उर केवल ज्ञान भये जये वंदन जोग्रसू भूम कटे जनमांतर पाप सु धूम ॥ १७ ॥ चढे उनिथि सिडियां जूं अशोक भरे जल के जय कुंड बिवेक कई पढते स्तोत्र अपार करे ध्वनि शब्द सूं मंगलचार ॥ १८ ॥ चले सब जाय सु पंचमी धोक जहां बहु जादु के देवे धोक पुरा तह कोस सुं चढायो अपार। सा इष्टनि में चडि है नर नार ॥ १६ ॥ जहां पहुंचे प्रभु नीम अधार करे जय शब्द सु जय जयकार करें। प्रभु पूजन नेम सुं द्रव्य नाचह गाय वजाय सुं सब्य ॥ २० ॥ जहां सुर ज्ञान त्रि-काल करंत पढ मुख पाठ गुणी उचरंत। वजते हैं भ्रम भ्रम ताल मृदंग करे धुनि घंटा सुं भरें महुचंग ॥ २१ ॥ नचे जयदेव सुनान जहां सुर आनद लेत सुरंग टरे अद जे भजि

जाय सुपुर सदा जनकूं सुख आनद पूर ॥२२
मुनि सप्त वरोत्तर कोडि वरि सिव नार वती
जिम चोड प्रभु तुम नीम सुं सुनुं यह अरज
घटे इन कर्मन को जोरिन करजं ॥ २३ ॥ नहीं
जब ल्यो सब होय लगार मले तब लो जन
धर्म अधार मिसे कल श्रावक भवभव मोय
मिले तुम सर्नसूं भव भव मोई ॥ २४ ॥ यही
विनती सुनिय आनिनाथ हरो भव पीर सुं हो य
सुनाथ खडो बिनती कर तोसूं जवार दियो सब
मो यसुनूं करतार ॥ २५ ॥ घत्ता श्री प्रभु बन्दों
भव दुख दंदों मन आनंद धो धरं धरं तरिथ
गर नारं सब सुख कारं भवदुख हारं सुख करं ॥
२६ ॥ इति गिरनार पूजा समाप्त (सम्पूर्ण मिती
माघ द्वितीया आसोज सुदि १३ सोमवारसम्वत्
१६३६ लिखंत गंगा धर वासी श्रीसोना गिर के।

❀श्री वीत राग जी❀

अथ श्री चन्द्रनाथजी की
॥ पूजा लिखंते ॥

॥ दोहा ॥

सशि सम द्युतितण सोहनों अष्ट मेस जिन राई हाथ जोड तनकूं नमूं वार वार सिर नाई ।१। हमण चल के सीस पर चंद्र नाथ जगराय आह्वानन हम करत हैं तिष्ट तिष्ट मयराय । २ । ओं ह्री श्री सोनागर पर्वत उपर श्री चंद्रनाथ जगराय विराजमान तिन के चरणारविंद की पूजा जिन अत्रा वत्रावतर संवौषट इत्या ह्वाननं अत्रा तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्नि हतो भव भव वषट सन्नि-

धपनं सं निधि करनं परि पुष्पांनजालि छी
पेत् अथाष्टाकं गीता छंद कणकादिक
झारी रत्न झारी शुद्ध जल कर मैं भरुं
त्रयधार अन पद अग्र देकर त्रिषा रोग
हिय हरो अब सुफल जन्म भयो हमारे
देष दरस सुरेस के पूजूं सुरचि चरन अंबुज
चन्द्रनाथ जिनेस के ओं ह्रीं श्री चंद्रनाथ प्रभु
जिनेंद्रेभ्यो नमः जलं ॥ १ ॥ केशर कपूर मिलाय
चंदन मालियागिर घसल्या हूं भवताप मेटन
काज को प्रभु चरन अग्र चढावहुं आविसुफल
चंदनं ॥ २ ॥ तंडुल अखंडित ऊजरे सुभगंधि
कर महकाईए जिन चरन आगे पूज्यधर
शिव नगर वास बसाईए आविसु अक्षत ॥३॥
केतकी मचकुंद चंपो आपु हातन ल्याइये।
केवरो जु गुलाब आदिक सुद्धि फुल चढाइये

अविसु पुष्पम् ॥४॥ सित खोपरा दाख छुहारा पाक बहु जू सकरा पय आदि ले कर पूजिये भगवान जू । अविसुफल० नैवेद्यम् ॥५॥ पुनि कनक उज्जलि आरती तामही कपूर उजारिए ताके प्रकास जिनेन्द्र पद लख मोह फांस वि-दारिए । अविसुफल दीपम् ॥ ६ ॥ श्रीखंड अगर कपूर आदिक सुं लेए दशांग सजोईये, यह धूप लै जिन अग्रखेवहूं कर्म वसु निवछाईए अविसुफ० धूपम् ॥ ७ ॥ एलाल वंग बादाम श्रीफल क्रमुक दाडिम लाईये, फल सुद्धि फांस देखकर तसुमोल महगो पाईए, अवि सुफल जन्म० फलम्० ॥ ८ ॥ जलगंध अक्षत पुष्प चरु ले दीपवर्ती उजारिए पुनि धूप फल इन जोइन सुजिन अग्र अर्घ उतारिए। अविसुफल जन्म भयो हमारो देख दरश सुरेश के। पूज

सूरुचि कर चरन अंबुज चंद्रनाथ जिनेस के, ओं ह्रीं अर्घं ॥ ६ ॥

॥ अथ जयमाला ॥

॥ दोहा ॥

चंद्र चिन्ह लिख चरन में, सुभ्र वरण तनु जास, भनत भागीरथ आरती धरकर हिय हुलास ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

चयचंद्र पुरी नगरी पुनीत राजा महीसेन करे सुनीत रानी सुलक्षना तसु गम्भीर तन नाम लेत दुख मिटत पीर ॥ २ ॥ तजि बैजयंतित सुकुंष आइये पितु मात प्रजा सब सौष्य दाईं। वदि चैत्र पंचमी सुदि वेल मनुंदर्थन में

जिम दर्ष षेल ॥ ३ ॥ जहं गर्भ कल्याण का
कियो सुरेस रत्नादि वृष्टि की निधन से षट
पंच कुमारी ग्रेह आय जननी सेवा सुन
जोगपाई ॥ ४ ॥ वदि पोष सु एकादस पुनीत
तिहि जन्म उतरा माही कीत दस लाख पूर्व
की आयु जान, पूर्वसू अडाइ कूं वर मान ५
साडि छह पूर्व लछ जोए तहि राज करो चहुं
दिसन सोर पोष सुदि द्वादसी प्रधान इक पूर्व
लच्हात पेको प्रमान ॥ ६ ॥ तरु नागर तैल
दीक्षा सुठौर इक सहस भूपत पुकीयो है
और इक नगर नामह पद्म खंड तह चंददत्त
राजा प्रचंड ॥ ७ ॥ तिनि के अहाणो दुग्ध
आई त्रय वर्ष रहै छ दमस्त जाई तह चार
घातिया कियो हेजर फागुन वदी सात त्रतीय
वेर ॥ ८ ॥ उत्पन्न भयो केवल सुज्ञाण समवा

दरसन को यही प्रमान जो जन बसु साढे मान पाई गण धर सुद तरनि आद आई ॥ ६ ॥ सत एक सप्त घट गण गहगाईं हुय लक्ष अर्द्ध सह प्रति गहगाई, त्रय लक्ष और असी हजार आजित हजारगों बर्त सार ॥१०॥ श्रावक त्रलक्ष गनीए सुसाच श्रावकनी गनती लाख पांच दो सहस अवधि वारे मुनीस मन पजय आठ हजार ईस ॥ ११ ॥ वसु सहस सु केवल ज्ञान वान पुनि सप्त सहस वादि प्रमान ॥ १२ ॥ तसु विजय नाम कर जक्षराय पुनि जक्षन मालिन मान पाई ॥ १३ ॥ वदि सप्तम फागुन की सुपाई संमेद शिषिर चाडि मोक्ष राय इक्ष्वाक वंस जिन को सुठाम भव पार करन जिन जपति नाम ॥ ३३ ॥

॥ सोरठा ॥

घता को पहुंचे मुक्ति मझार कर्म रिपुन को जीत
वर तिन हिन वावेनाथ भागिरथकर जोर कर ॥४

इति श्री चंदा प्रभु पूजा संपूर्ण समाप्तः
प्रथम आसोज सुदि दस गुरौ संवत् १९३६

लिखितं पं० गंगाधर बासी श्री सोनागिर के
॥ श्री शुभं मंगलं भवतु ॥

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

॥ जैन भजन संग्रह ॥

[भजन हजूरी]

जिनवर जी मोय द्यो दर्शनवा ॥ टेर ॥ विरद तिहारो मैं सुन आयो अब मो मन तुम करो परसनवा ॥१॥ मोह तिमिर के दूर करन को नाहिं दिवाकर तुम सम अनुवा ॥२॥ अब सेवक हित कर गुण गावे उमग २ परसें चर्णनवा ॥ ३ ॥

चलिये जिनेश्वर जिनेश्वर जिनेश्वर पूजिये चन्दा प्रभु महाराज ॥ टेर ॥ जल जल सु-चन्दन सुचन्दन सुअक्षत लीजिये जामें पुष्प मिलाय ॥ १ ॥ चरु अरु सुदीप सुदीप सुधूप फल लीजिये आठों दरब मिलाय ॥२॥ केवल

राम दोउ कर दोउ कर जोरे आवागमन मिटाय ॥ ३ ॥

तारणतरण जिनेश्वर स्वामी अपना विरद् निभाना होगा । टेर । सबके नाथ जग वि-ख्यातं नरकों सेती बचाना होगा ॥ १ ॥ कर्मों ने मारा कैद् में डारा यम राजा सेती बचाना होगा ॥ २ ॥ चोरी भी कीनी दीक्षा हू न लीनी सब ऐबों को छिपाना होगा ॥ ३ ॥ जब लग मुक्ति न होय चैन की चरणों सेती लगाना होगा ॥ ४ ॥

बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल वेकरारी है ॥ टेर ॥ चौरासी लाख में भटक्यो बहुत सी देह धारी हैं । मुसीवत जो सही मैंने हकीकत सब गुजारी है ॥१॥ घेरा मुझे आठ करमों ने गले जंजीर डारी है । विरद् तारण

सुनों मैंने प्रभु तैं दुःख निवारी है ॥ २ ॥
जगत के देव सब देखे सभी के लोभ
भारी है। कोई कामी कोई क्रोधी किसी के
संग नारी है ॥ ३ ॥ सही हो देव देवनि के
सभी विपता निवारी है । पना को कुगति से
त्यारो यही अरजी हमारी है ॥ ४ ॥

चलोरी सखी छवि देखन को रथ चढ
जादुनन्दन आवत हैं ॥ टेर ॥ तीन छत्र अरु
तीन सिंहासन चौंसठ चमर ढुरावत हैं ॥१॥
मोर मुकट सिर छत्र विराजे गिरनारी को
ध्यावत हैं ॥ २ ॥ लालचंद की यही अरज है
सब सखी मंगल गावत हैं ॥ ३ ॥

मैं आयो प्रभु जी तेरी शरण ॥ टेर ॥
ल ख चौरासी के मांही प्रभु जी करतो फिरयो
में जामन मरन ॥ आन देव मैं भूलिरे सेया

तुम हो प्रभु जी तारन तरन ॥ २ ॥ सेवक को अपनो लखि प्रभु जी सेवा दीजिये निज ही चरन ॥ ३ ॥

तेरे दरशन के देखे से मुझे आराम होता है ॥ टेर ॥ दरस मोय दीजिये प्रभु जी दरस में दिल हमारा है ॥ अन्धेरी रैन में जैसे कि चांदनी का पसारा है ॥१॥ करों कछु और बने कछु और यही जंजाल होता है ॥ जरा साधुन के मिलने से सरासर काज होता है ॥ २ ॥ मेरा महाराज दिल जानी मंदिर के बीच बसता है ॥ उन्हीं के ध्यान में मोती झला झल झल झलकता है ॥ ३ ॥

नींद उचट गई सगरि मोह की सूरति निरखी सांवरी ॥ टेर ॥ नेमीश्वर के पद परसत ही पायो मैं विसराम री ॥१॥ ध्यानारूढ़ लि-

हारि । छवी को छूटत भव दुःख धामरी ॥२॥ मुनिजन याको ध्यान धरत ही पावत आतम रामरी ॥ ३ ॥

लागीजी म्हारा नयनारी डोरी ॥ टेर ॥ सोहनी सूरति मोहनी मूरति जब देखूं तव तोरी ॥ १ ॥ तुम गुण महिमा कह न सकत हूं मो में है बुधि थोरी ॥ २ ॥ चन्द खुशाल दोउ कर जोरें मेंटो भव बन फेरी ॥ ३ ॥

हम, आये जी महाराज तोरे बन्दन को ॥ टेर ॥ पूजूं ध्याऊं मन ल्याय पाप निकन्दन को ॥ १ ॥ चउ गति तें लेहु छुडाय काटो फंदन को ॥ २ ॥ ध्यानत पर होउ सहाय जैसे नन्दन को ॥ ३ ॥

उवार लीजो जी प्रभुजी मेरी नाव । टेर । संसार उदधि अगाध के बीच परी मेरी नाव ।

करम वायु के जोर ते इत उत झोला खाव। चउ गति रूपी भवर में फंसी नाव यह मोय। छिद्र युक्त जीरण भई डूबक २ होय। २। खेव- टिया इस जगत में सुन्दर तोहि निहार। अब तो वेग उबारिये नाहक करो अबार ॥ ३ ॥

तुहि तुहि याद आवे दरद में ॥ टेर ॥ सुख संपति में सब कोई साथी भीड पड्या भग जावें दरद में। १। भाई बंधू अरु कुटुब कबी ला आ संग मन ललचावें दरद में। २। प्रेम दिवाना है मस्ताना सदा जिनंद गुण गावे। दरद में ॥ ३ ॥

हो टुक नजर महर की करना ॥ टेर ॥ मैं हूं अधम पापकी मूरति मेरा दोष न धरना ॥ १ आपन तो कैलाश सिधारे मेरा कौन अभरना ॥ २ ॥ भूधर दास आस चरनन की मोय

पार ले चलना ॥ ३ ॥

सुनरी सखी हमारी मुझे नेमि पिया ने विसारी ।टेर। प्रभु ब्याहन को जब आये पशुअन नें शोर सुनाये प्रभु करुणा उर में धारी । १; प्रभु तोरण सों रथ मोडा आभूषण सब तोडा प्रभु जाय चढे गिरिनारी ॥ २ ॥ अब हम को भी सँग लीजे ज्ञानामृत रस दीजे सेवक शरण तिहारी ॥ ३ ॥

भगवान आदि नाथ जिन सों मन मेरा लगा आराम मुझे होत है दुःख दरद से भगा ॥ टेर मरू देवि नन्द धर्म कन्द कुल में सूर्य उगा । नृप नाभि राय के कुमार नमत सुर खगा ॥ १ ॥ जुगलिया निवारी भ्रम के जंजाल को तगा । वसु करम को निवारि के शिव पंथ में पगा ॥ २ ॥ अबतो करो

शिताब महरबान दिल लगा । दास हीरा लाल को दीजौ मुक्ति का मगा ॥ ३ ॥

मेंटो व्यथा हमारी प्रभु जी ॥ टेर ॥ मोह विषम ज्वर आन सतायो । देते महा दुःख भारी । यह तो रोग मिटन को नाहीं औषधि बिना तिहारी ॥ १ ॥ तुम ही वैद्य धनवन्तरि कहिये तुम ही मूल पसारी । घट घट की प्रभु तुमही जानो कहा जाने वैद अनारी ॥ २ ॥ तुम हकीम त्रिभुवन पति नायक पाऊं टहल तिहारी । संकट हरण चरन जिन जी के नैनसुख शरण तिहारी । जी ॥ ३ ॥

तुम लाज राखो प्रभु मेरी करुणा निधि स्वामी जी । दुःख अनन्त अगोचर भुगते चउं गाती के मांही जी ॥ टेर ॥ पड वैतरणी के मांही बहु गोते खाये जी । मुझे छुंका तला विदारा

नरकन के माही जीं ॥ १ ॥ कपि श्वान सूर भया भैंसा दुष्टों ने नाथ डारी जी । तहां भूख प्यास अति भुगती तिर्यंच गति मांही जी ॥ २ ॥ हो नार नपुंसक भुंजा अथवा बहरा नकटाजी । नव मास अधो मुख भूला नर भवके मांही जी ॥ ३ ॥ देवियन संग बहु राच्यो पर सम्पत् देख भूराजी । तहां हा हा कार मैं कीनों सुर गति के मांही जी ॥ ४ ॥ अब काल लब्धि कारण तें तुम वच कान धारी जी प्रभु अविनाशी पद दीजे पञ्चम गति मांही जी ॥ ५ ॥

गही जिन चरण शरण तेरी । नेमि प्रभु अर्ज सुनो मेरी ॥ टेर ॥ नेमि प्रभु तोरन जब आये । जगत में आनन्द अति छाये दीन अज मृगादि घबराये । भक्ति धर प्रभु के गुण

गाये । समुदविजय के पुत्र जी सुनो नेम महाराज । जीव दान बखशो हमें दया धर्म के काज । करो मत पल भर की देरी ॥ १ ॥ अरज तिर्यंच सभी जो करी, नेमि के करुणा जाय पडी । अहो हम अधर्म को लेवें । प्राण ये अनाथ क्यों देवें । धृक् धृक् इस संसार को जिस में कुछ नहिं सार । विषय भोग महा रोग को तजै जो पहिली पार । हृदय में जिन दीक्षा हेरी ॥ २ ॥ सेहरा कंकण सब तोडे । भूप सब देखत ही दौडे । अहो प्रभु यह क्या मति ठानी ॥ खडे सब राजा और रानी । भूप सुनों निज चित्त की चलो सभी गिरिनार । केवल ज्ञान को धारि के वरो मुक्ति वरनार । मिटै भव भ्रमण गहन फेरी ॥ ३ ॥ दिगंबर मुद्रा को धारी । वरी प्रभु मुक्ति रूप नारी ।

अरज राजुल की सुन लीजे । साथ प्रभु मुझ को भी लीजे । भव्य आर्यिका संग में राजुल तप धर लीन । अब मोय बेग उबारियो विरद् रावरो चीन । चौथमल चरण शरण हेरी ॥४॥

प्रातःकाल की स्तुति ।

वीतराग सर्वज्ञ हितं कर भवि जन की अब पूरो आस । ज्ञान भानु का उदय करो मम मिथ्यातम का हो अब नास ।१। जीवों की हम करुणा पालें झूट बचन नहीं कहें कदा । पर धन कबहुं न हरहू स्वामी ब्रह्मचर्य व्रत रहे सदा ।२। तृष्णा लोभ बढे न हमारा तोष सुधा निधि पिया करैं ॥ श्री जिन धर्म हमारा प्यारा तिस की सेवा किया करैं ॥ ३ ॥ दूर भगावें बुरी रीतियां सुखद् रीति का करैं प्रचार ।

मेल मिलाप बढावें हम सब धर्मोन्नति का करें प्रचार ॥ ४ ॥ सुख दुःख में हम समता धारें रहे अदल जिमि सदा अटल । त्याग मार्ग को लेश न त्यागें वृद्धि करें निजि आतम बल ॥ ५ ॥ अष्ट कर्म जो दुख देते हैं तिनके क्षय का करें उपाय । नाम आप का जपें निरन्तर विघ्न रोग सब ही टर जाय ॥ ६ ॥ आतम शुद्ध हमारा होवे पाप मैल नहिं चढे कदा । विद्या की उन्नति हो हम में धर्म ज्ञान हूं बढे सदा ।७। हाथ जोडकर शीश नवावें तुमको भविजन खडे खडे ! यह सब पूरो आस हमारी चर्ण शरण में आन पडे ॥ ८ ॥
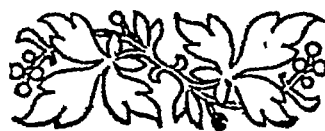
सायंकाल की स्तुति।

हे सर्वज्ञ ज्योति मय गुण मणि बालक जन पर करहु दया। कुमति निशा अंधियारी कारी सत्य ज्ञान रवि छिपा दिया। १। क्रोध मान अरु माया तृष्णा यह बट मार फिरें चहुं ओर। लूट रहे जग जीवन को यह देख अविद्या तम का जोर। २। मारग हमको सूझे नाहीं ज्ञान बिना सब अंध भये। घट में आप बिराजो स्वामी बालक जन सब खडे नये। ३। सतपथ दर्शक जन मन हर्षक घट घट अन्तरयामी हो। श्री जिन धर्म हमारा प्यारा तिसके तुमही स्वामी हो। ४। घोर विपति में आन पडा हूं मेरा बेडा पार करो। शिक्षा का हो घट घट आदर शिल्प कला संचार करो। ५। मेल मिलाप बढावें हम सब द्वेष भाव हो घटा घटी। नाहिं सतावें किसी जीव को प्रती चौर की गटा गटी। ६। मात पिता अरु गुरु जन की हम सेवा

निश दिन किया करें। स्वारथ तजकर सुखदें पर को आशिश सब की लिया करें ।७। आतम शुद्ध हमारा होवे पाप मैल नहिं चढे कदा। विद्या की हो उन्नति हम में धर्म ज्ञान हु बढे सदा ।८ दोऊ कर जोडे बालक ठाडे करें प्रार्थना सुनिये दाः सुख से बीते रैन हमारी जिन मत का हो शीघ्र प्रभाव ।६। मात पिता की आज्ञा पालें गुरु की भक्ति धरें उर में। रहे सदा हम कर्तव्य तत्पर उन्नति करदें पुर पुर में। १०।